नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग।
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय - राजनीति शास्त्र विभाग
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग - 03, सत्र 2019-20
पेपर - 08 : दिनांक - 23.07.2020

टॉपिक — होमरूल आंदोलन - पृष्ठभूमि और उद्देश्य -

पृष्ठभूमि - श्रीमती बेसेण्ट एक आयरिश महिला और भारत में थियोसॉफिकल सोसायटी की संचालिका थी। वे आयरलैंड में स्थापित 'होमरूल लीग' की भांति भारत में होमरूल आंदोलन की शुरुआत की। इसलिये वे कांग्रेस में शामिल हुई तथा उदारवादियों एवं उग्रवादियों को एकताबद्ध कर 'होमरूल आंदोलन' चलाया गया। भारत में होमरूल आंदोलन का नेतृत्व ~~अध्यक्ष~~ — लोकमान्य तिलक और श्रीमती बेसेण्ट के द्वारा किया गया।

उद्देश्य — होमरूल आंदोलन एक वैधानिक आंदोलन था जिसका प्रथम उद्देश्य भारत के लिये स्वशासन प्राप्त करना था। जैसा कि एनी बेसेण्ट ने अपने पत्र 'Common Weal' में लिखा था कि ''राजनीतिक सुधारों से हमारा उद्देश्य ग्राम पंचायतों से लेकर जिला नगरपालिकाओं तथा विधान-सभाओं तक राष्ट्रीय संसद के रूप में स्वशासन की स्थापना करना है।'

द्वितीय, श्रीमती बेसेण्ट ब्रिटिश साम्राज्य की विरोधी नहीं थी और न ही आंदोलन का उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से निकालना या उनके युद्ध प्रयत्नों में बाधा डालना था। इसके विपरीत यह आंदोलन तो इस विचार पर आधारित था कि 'स्वशासित भारत साम्राज्य के लिये युद्ध में अधिक सहायक हो सकेगा। इस प्रकार इसका उद्देश्य युद्ध में परोक्ष रूप से ब्रिटेन को सहायता देना था।

तृतीय - होमरूल आंदोलन का एक अन्य उद्देश्य भारतीय राजनीति को उग्रवाद की ओर जाने से रोकना था। बेसेण्ट ने भारतीय राजनीति की प्रवृत्तियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकाला ~~था~~ कि यदि शांतिपूर्ण और वैधानिक आंदोलन नहीं प्रारंभ किया गया तो भारतीय राजनीति पर क्रांतिकारियों एवं आतंकवादियों का

Scanned with CamScanner

आधिपत्य हो जायेगा। अतः शांतिपूर्ण एवं वैधानिक आंदोलन चलाना ही श्रेयस्कर समझा।

चतुर्थ, युद्धकाल में भारतीय राजनीति शिथिल पड़ गई थी और सक्रिय कार्यक्रम तथा प्रभावशाली नेतृत्व के अभाव में राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति अवरुद्ध हो गई थी। अतः भारतीय जनता को सुप्तावस्था से जगाने के लिये इस प्रकार का आंदोलन प्रारम्भ किया गया। बेसेण्ट ने कहा था कि, 'मैं तो एक भारतीय टॉम-टॉम हूँ जिसका कार्य सोते हुये भारतीय को जगाना है ताकि वे उठें और अपनी मातृभूमि के लिये कुछ कार्य करें।'

इस प्रकार होम रूल आंदोलन एक अधिकारपूर्ण मांग की अभिव्यक्ति थी। बेसेण्ट ने कहा था कि 'होम रूल भारत का अधिकार है और राजभक्ति के पुरस्कार के रूप में उसे प्राप्त करने की बात मूर्खतापूर्ण है।